१२. झलमला

– पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी

पूरक पठन

मैं बरामदे में टहल रहा था। इतने में मैंने देखा कि विमला नौकरानी अपने आँचल के नीचे एक प्रदीप लेकर बड़ी भाभी के कमरे की ओर जा रही है। मैंने पूछा, क्यों री, यह क्या है ? वह बोली, 'झलमला ।' मैंने फिर पूछा, 'इससे क्या होगा ?' उसने उत्तर दिया, 'नहीं जानते हो बाबू, आज तुम्हारी बड़ी भाभी पंडित जी की बहू की सखी होकर आई हैं । इसीलिए मैं उन्हें झलमला दिखाने जा रही हूँ ।' तब तो मैं भी किताब फेंककर घर के भीतर दौड़ गया। दीदी से जाकर मैं कहने लगा, 'दीदी, थोड़ा तेल तो दो ।' दीदी ने कहा, 'जा, अभी मैं काम में लगी हूँ ।' मैं निराश होकर अपने कमरे में लौट आया । फिर मैं सोचने लगा– यह अवसर जाने न देना चाहिए, अच्छी दिल्लगी होगी। मैं इधर–उधर देखने लगा । इतने में मेरी दृष्टि एक मोमबत्ती के टुकड़े पर पड़ी । मैंने उसे उठा लिया और एक दियासलाई का बक्स लेकर भाभी के कमरे की ओर गया। मुझे देखकर भाभी ने पूछा, 'कैसे आए, बाबू?' मैंने बिना उत्तर दिए ही मोमबत्ती के टुकड़े को जलाकर उनके सामने रख दिया। भाभी ने हँसकर पूछा, 'यह क्या है ?' मैने गंभीर स्वर में उत्तर दिया, 'झलमला ।' भाभी ने कुछ न कहकर मेरे हाथ पर पाँच रुपये रख दिए । मैं कहने लगा, 'भाभी, तुम्हारे प्रेम के आलोक का इतना ही मूल्य है ?' भाभी ने हंसकर कहा, 'तो कितना चाहिए ?' मैंने कहा, 'कम–से–कम एक गिनी।' भाभी कहने लगी, 'अच्छा, इसपर लिख दो; मैं अभी देती हूँ ।' मैंने तुरंत ही चाकू से मोमबत्ती के टुकड़े पर लिख दिया– मूल्य एक गिनी ।' भाभी ने गिनी निकालकर मुझे दे दी और मैं अपने कमरे में चला आया । कुछ दिनों बाद, गिनी के खर्च हो जाने पर मैं यह घटना बिलकुल भूल गया ।

आठ वर्ष व्यतीत हो गए । मैं बी.ए., एल.एल.बी. होकर इलाहाबाद से घर लौटा । घर की वैसी दशा न थी जैसे आठ वर्ष पहले थी । न भाभी थी और न विमला ही । भाभी हम लोगों को सदा के लिए छोड़कर स्वर्ग चली गई थीं और विमला कटंगी में खेती करती थी । संध्या का समय था । मैं अपने कमरे में बैठा न जाने क्या सोच रहा था । पास ही कमरे में पड़ोस की कुछ स्त्रियों के साथ दीदी बैठी थीं । कुछ बातें हो रही थीं, इतने में मैंने सुना, दीदी किसी स्त्री से कह रही हैं, 'कुछ भी हो, बहन, मेरी बड़ी बहू घर की लक्ष्मी थी ।' उस स्त्री ने कहा, 'हाँ बहन ! खूब याद आई, मैं तुमसे पूछने वाली थी ।

परिचय

जन्म : २७ मई १८९४ खैरागढ़ (म.प्र.)

मृत्यु : १८ दिसंबर १९७१ रायपुर (म.प्र.)

परिचय : बक्शी जी कवि, कथाकार, समीक्षक, निबंधकार अनेक रूपों में हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध हैं। आप विभिन्न विषयों पर उच्च कोटि के ललित निबंध भी लिखे हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : हिंदी साहित्य विमर्श, विश्व साहित्य (आलोचना), हम, मेरी अपनी कथा, मेरे प्रिय निबंध, मेरा देश, वे दिन, समस्या और समाधान (निबंध संग्रह) यात्री (यात्रा वृत्तांत) । बक्शी जी की रचनाओं की ग्रंथावली ८ खंडों में विभक्त हैं ।

गद्य संबंधी

लघुकथा : लघुकथा किसी बहुत बड़े परिदृश्य में से एक विशेष क्षण/प्रसंग को प्रस्तुत करने का चातुर्य है ।

इस कहानी द्वारा लेखक ने भाभी–देवर के निश्छल प्रेम, तत्कालीन पारिवारिक स्थितियों एवं विशेष प्रसंगों से जुड़ी स्मृतियों को बड़े ही मार्मिक ढंग से दर्शाया है ।

उस दिन तुमने मेरे पास सखी का संदूक भेजा था न ?' दीदी ने उत्तर दिया, 'हाँ बहन, बहू कह गई थी कि उसे रोहिणी को दे देना ।' उस स्त्री ने कहा, 'उसमें सब तो ठीक था पर एक विचित्र बात थी ।' दीदी ने पूछा, 'कैसी विचित्र बात ?' वह कहने लगी, 'मैंने संदूक खोलकर एक दिन देखा तो उसमें एक जगह खूब हिफाजत से रेशमी रूमाल में कुछ बंधा हुआ मिला। मैं सोचने लगी, यह क्या है। कौतूहलवश उसे खोलकर मैंने देखा। बहन, कहो तो उसमें भला क्या रहा होगा ?' दीदी ने उत्तर दिया, 'गहना रहा होगा।' उसने हँसकर कहा, 'नहीं, उसमें गहना न था। वह तो एक अधजली मोमबत्ती का टुकड़ा था और उसपर लिखा हुआ था 'मूल्य एक गिनी ।' क्षणभर के लिए मैं ज्ञानशून्य हो गया, फिर अपने हृदय के आवेग को न रोककर मैं उस कमरे मैं घुस पड़ा और चिल्लाकर कहने लगा, 'वह मेरी है; मुझे दे दो ।' कुछ स्त्रियाँ मुझे देखकर भागने लगीं । कुछ इधर-उधर देखने लगीं । उस स्त्री ने अपना सिर ढाँकते-ढाँकते कहा, 'अच्छा बाबू, मैं कल उसे भेज दूँगी ।' पर मैंने रात को एक नौकरानी भेजकर उस टुकड़े को मँगा लिया । उस दिन मुझसे कुछ नहीं खाया गया।

पूछे जाने पर मैंने कहकर टाल दिया कि सिर में दर्द है । बड़ी देर तक मैं इधर-उधर टहलता रहा । जब सब सोने के लिए चले गए तब मैं अपने कमरे में आया । मुझे उदास देखकर कमला पूछने लगी, 'सिर का दर्द कैसा है ?' पर मैंने कुछ उत्तर न दिया; चुपचाप जेब से मोमबत्ती को निकालकर जलाया और उसे एक कोने में रख दिया । कमला ने पूछा, 'यह क्या है ?' मैंने उत्तर दिया, 'झलमला ।' कमला कुछ न समझ सकी। मैंने देखा कि थोड़ी देर में मेरे झलमले का क्षुद्र आलोक रात्रि के अनंत अंधकार में विलीन हो गया।

—०—

शब्द संसार

प्रदीप (पुं.सं.) = दीप
सखी (स्त्री.फा.) = सहेली
दिल्लगी (स्त्री.सं.) = मजाक
आलोक (पुं.सं.) = प्रकाश

संभाषणीय

अपने बचपन की कोई विशेष घटना अपने मित्रों को बताओ ।

श्रवणीय

प्रेमचंद द्वारा लिखित 'बड़े घर की बेटी' यू ट्यूब पर सुनिए और संक्षेप में सुनाइए ।

पठनीय

किसी एकांकी को पढ़कर उसके केंद्रीय भाव बताइए ।

लेखनीय

निम्न शब्दों का उपयोग करते हुए कहानी लेखन कीजिए :
मोमबत्ती, कागज, बूँदें, नारियल का वृक्ष

विषय से...

'सार्क परिषद' में भारत का योगदान' इस संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए और चर्चा कीजिए ।
नौवीं कक्षा, भूगोल पृ. ७१

मौलिक सृजन

निम्नलिखित मुद्दों के उचित क्रम लगाकर उनके आधार पर कहानी लेखन कीजिए :

[मुद्दों का उचित क्रम लगाना आवश्यक है ।]

मन में निश्चय
लोगों का जुड़ना
एक लड़का
छुट्टियों में गाँव आना
कुआँ तैयार होना
लोगों का खुश होना
सीख,शीर्षक
कुआँ पानी से भरना
लोगों का हँसना
कुआँ खोदने का प्रारंभ
प्रतिवर्ष सूखे की समस्या का सामना
एक मित्र का साथ देना
शहर के महाविद्यालय में पढ़ना

आसपास

अंतरजाल की सहायता से विविध राज्यों में मनाएँ जाने वाले 'भैया दूज', 'रक्षाबंधन' त्योहारों की विधियाँ प्राप्त कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(क) निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही, गलत पहचानिए तथा गलत कथन को सही करके लिखिए ।

१. कुछ स्त्रियाँ मुझे देखकर भागने लगीं ।

२. घर की वैसी दशा न थी जैसे आठ वर्ष पहले नहीं थी ।

३. कमला कुछ न समझ सकी ।

४. वह तो एक अधजला कागज का टुकड़ा था ।

(२) परिवार के प्रिय व्यक्ति पर आपके विचार लिखिए ।

7VAYG2

पाठ से आगे

'मैं देश का, देश मेरा', इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

रचना बोध

.....

.....

.....